Bihar Board Class 8 Hindi Notes Chapter 22 सुदामा चरित

सुदामा चरित

सुदामा और कृष्णा ..... परिचित कराती है।
भावार्थ – सुदामा का परिचय देते हुए श्रीकृष्ण के सामने द्वारपाल कहता है-हे प्रभु एक ब्राह्मण द्वार पर खड़ा है, उसके सिर पर न पगड़ी है और न शरीर में कुर्ता, फटी धोती पहने, कन्धे पर मैला दुपट्टा है। उसके पैर में जूते भी नहीं हैं। वह अपना नाम सुदामा बता रहा है।

भगवान श्रीकृष्ण सुदामा नाम सुनते ही दौड़कर गले लगा लेते हैं। दोनों की आँखों से आँसू बहने लगे ।सुदामा के पैर में विवाय देखकर श्रीकृष्ण उनके पैरों को धोते-धोते रोने लगते हैं। मानो परात के पानी से नहीं बल्कि आँख के आँसू सुदामा के पैरों को धो रहे हैं।

बाद में श्रीकृष्ण ने सुदामा से कहा – अभी भी तुम चोरी करने में प्रवीण हो, बचपन में गुरु माता ने चना-गुड़ खाने के लिए हम दोनों को दिया था लेकिन तुम चुराकर अकेले खा गया था। अब भाभी ने जो तन्दुल दी है उसे भी काँख में चुराकर दबा रखे हो।

सुदामा कुछ दिन बिताकर घर लौटते समय सोच रहे हैं, कृष्ण ने कुछ ,
नहीं दिया । हम बेकार द्वारिका आये । लेकिन जब वे अपने गाँव में
अपने घर के पास आते हैं तो वहाँ सुन्दर भवन देखकर सुदामा को लगा
कि क्या मैं भ्रमवश द्वारका ही पहुँच गये । क्योंकि वहाँ भी द्वारिका के तरह ही सुन्दर भवन हाथी-घोड़े सब साधन मौजूद थे।

सुदामा जो गरीब थे आज भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से धनवान हो गये।। जहाँ झोपड़ी थी वहाँ सोने का महल बन गया । जिनके पैर में जूते नहीं थे वे हाथी पर सवार होकर चलते हैं। यह सब कृपा यदुवंश मणि भगवान श्रीकृष्ण की थी। देवता लोग भी । भगवान श्रीकृष्ण की कृपा जानकर आकाश से फूल बरसाने लगे।

https://www.evidyarthi.in/